पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम– प्रभात

लेखक– पं0 शिवानंद चौबे
प्रकाशन – संगिनी प्रकाशन
संस्करण– प्रथम 2022
पुस्तक में कुल पृष्ठों की संख्या– 536 पृष्ठ

कविता मानव जीवन को प्रकाशित करती है। उसी प्रकार यह पुस्तक जो प्रभात नामक शीर्षक द्वारा रचित है। यह प्रभात सहृदय जनों के अंतःकरण को प्रकाशित करेगी। जनपद जौनपुर की धरती वास्तव में बड़ी उर्वरा है। यहां पर कवि, लेखक जैसे वैदुष्य का अपार भंडार है। इसी क्रम में प्रभात के लेखक पंडित शिवानंद चतुर्वेदी जी हैं। इनकी लेखनी मां गंगा की धारा की तरह अविरल प्रवाहमान है। आपने अपने प्रभात नामक ग्रंथ में जो कविताओं का संग्रह किया है। वह अद्भुत है। पुस्तक प्रभात पूर्व प्रकाशित छः पुस्तकों व कुछ अप्रकाशित रचनाओं का एक संयुक्त काव्य संग्रह है। जिसमें रम्भा, अलिगुंजन, यक्ष गुंजन, गीत गुंजन, वातायन, परवाज जैसे ग्रंथों के गीतों का संग्रह है।

कवि के द्वारा अपने काव्य खंड रम्भा में समुद्र मंथन के द्वारा 14 रत्नों का प्राकट्य हुआ। इस अद्भुत कथा को बड़े ही अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

धनवंतरि कर अमित ले औषधि जिसु प्रतिरोम।
कामधेनु कलपद्रुम अमरावति शशि व्योम।।
रम्भा से पहले प्रकट श्री मणि हुई अनूप।
पाञ्चजन्य धनु हरि लिए चारों अति अपरूप।।
चारों अति अपरूप बाजि ऐरावत सुरपति।
सुरा असुर विष कालकूट को गह्यो उमापति।।
रूप अनुपम देखि हुआ अति रतिहिं अचंभा।
सुंदरि सबै सिहात प्रकट देखी जब रम्भा।।

कवि ने अपने अगले खण्ड में अलिगुंजन द्वारा भौरों के प्रेम को प्रदर्शित करते हुए कहा कि

आई बसे ब्रज ते जबहिं मथुरा माखन चोर।
प्रीति पुरातन ना घटे कटे न सुधि की डोर।।

इसी प्रकार कवि ने यमक अलंकार का अनूठा प्रयोग करते हुए सारंग के सारे अर्थ का प्रयोग प्रस्तुत पद में करने का अनूठा प्रयोग किया है।

सारंग के तन सारंग सारंग सारंग दाबि सतावत सारंग।
सारंग सी कटि सारंग भौंह कि चाल लगे जस आवत सारंग।।
सारंग स्वाति को सारंग सो जस तृप्ति के हेतु है जाचक सारंग।
सारंग ते फहरे उड़ि सारंग सारंग सी मृदु गावत सारंग।।

कवि ने विरह के दुख को व्यक्त करते हुए श्लेषानुप्राणित छन्द का अनूठा प्रयोग किया। जिसमें यक्ष के वियोग का माधुर्य भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

केहिं विधि दीरध निशि घटे दिवस याम त्रय थोर।
दाह घटे अस मन चहत आतप विरह कठोर ।।

कवि के द्वारा दिल टूटे आवाज न होती, दुख दिन दूना लगता है, आता कभी बसंत नहीं, सावन सावन नहीं रहा, मेरी कचहरी सुनी है, मेरे हृदय का हार गया, कहने सुनने की बातें हैं आदि कविताओं के माध्यम से विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति की है। दामन पर कोई दाग नहीं है। कविता के माध्यम से मानव ने स्वच्छ निर्मल हृदय की भावनाओं का प्रस्तुतीकरण कर स्व हृदय की अभिव्यक्ति की है।

सच कहता हूँ स्याह अंधेरे से कोई अनुराग नहीं है।
उजला था उजला ही है दामन पर कोई दाग नहीं है।।

अलबेला फागुन आए, अजहू नाही घर आए जैसी कविताओं में कवि ने ऋतुओं का अनूठा भाव प्रकट किया है। वातायन खण्ड में आपके द्वारा गुलाब, रम्भा ,पूनम, चॉद, जनवरी, कृष्णा, सीता स्वयंवर, कामिनी, विरह, प्रेम, होली, नारी, मधुमास, सती के साथ–साथ राजनीतिक सियासत पर भी अपनी लेखनी चलाकर चमचों एवं राजनीति के ठेकेदारों पर बड़ा ही सटीक व्यंग किया है।

जीता तो मेरे बड़े काम आया
दिया है कलोनी तिहावा गपक के।

वहीं

सलीके से चलती नफासत की अम्मा।
लगे जैसे पूरी शराफत की अम्मा।।
मगर करके वादे उन्हें भूल जाती।
मेरी प्रेमिका है सियासत की अम्मा।।

मुगलिया सल्तनत से मरते दम तक टक्कर लेने वाले राजपूत आन, बान और शान के ध्वजा वाहक महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक पर बहुत सारी कविताओं का ओजपूर्ण सृजन हुआ है। श्याम नारायण पांडेय जी भी चेतक पर लिखी कविता आज अजर अमर है। उसी भांति पंडित शिवानन्द चतुर्वेदी की कविता चेतक की अपनी शाब्दिक अभिव्यक्ति, ओजपूर्ण रस, से

सहृदयों के बीच विद्यमान है। कवि ने चेतक को वाजश्रवा का भाई समझते हुए अपनी व्यक्त की है।

लगता उठती अंगड़ाई सा।
सतकृत से हुई कमाई सा।।
देखे जो नजर ठहर जाती ।
वो वाजश्रवा के भाई सा।।

श्याम नारायण पांडेय की पंक्ति

चढ़कर चेतक पर घूम– घूम करता
करता मेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ–साथ
मानो प्रत्यक्ष कपाली था ।

उपरोक्त पद की छाप मानो कवि को कहीं न कहीं झकझोर देती है। तभी उसकी पंक्ति उन पंक्तियों की समरूपता स्पष्ट दिखाई देती है।

धरती से नभ तक दौड़ा था ।
क्षण क्षण परकख को मोड़ा था ।
संकेत समझ जाता पल में
ऐसा अलबेला घोड़ा था।।

सारांश स्वरूप कहा जाए तो लेखक ने अपने इन कविताओं के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति, अभिलाषाओं, विचारों को समझते हुए विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं को आत्मसात कर बड़ी ही सहज, प्रबोध एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी अभिव्यक्ति की है। कवि के ग्रंथ को पढ़ने के पश्चात यदि कोई कवि नहीं भी है तो उसके अंदर कविता का भाव अवश्य जागृत हो जाएगा। ऐसे कवि एवं उनके ग्रंथ का परिचय जनसाधारण को अवगत कराने के लिए यह पुस्तक सक्षम है। इसके लिए मैं पंडित शिवानंद चतुर्वेदी को बहुत–बहुत धन्यवाद देता हूं उन्होंने ऐसे ग्रंथ का प्रणयन किया। जो समाज के लिए एक नई कृति है।

समीक्षक
डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी

सम्पादक
शोधमार्तण्ड
प्राचार्य
श्री गौरीशंकर संस्कृत महाविद्यालय
सुजानगंज, जौनपुर (उ0प्र0)